॥ श्री सीता शरणं मम ॥

॥ श्रीरामानन्दायनमः ॥

श्री सीतोपनिषद्

[आथर्वणी]

अनन्तः श्री १००८ श्री सीताराम पद कंज मकरन्द मधु-
मधुप श्री स्वामी सीतारामीय परमहंस परि-
व्राजकाचार्य युगल विनोद विहारी शरण
कृत तत्वबोधिनी भाषा टीका

—:०:—

प्रकाशक—

श्री स्वामी १०८ सीतारामीय परमहंस परिव्राजका
चार्य युगलविनोद विहारीशरण जी महाराज
चरणाश्रित सिया वल्लभ शरण, श्री
जानकी कुण्ड, युगल विनोद
कुञ्ज, चित्रकूट।

मुद्रक—

पं० विश्वम्भरनाथ वाजपेयी ओंकार प्रेस, प्रयाग।

प्रथम बार १०००] सम्वत् १९२४ [मूल्य ।)

सर्वाधिकार संरक्षित

शोध संस्थान
15020
अयोध्या
छावनी सेवा ट्रस्ट

॥ श्री सीता शरणं मम ॥

॥ श्री रामानन्दाय नमः ॥

श्री

अथ सीतोपनिषत्

—:०:—

इच्छा ज्ञान क्रिया शक्तित्रयं यद्भाव साधनम् ।

तद्ब्रह्म सत्तासामान्यं सीता तत्वमुपास्महे ॥

भावार्थः—इच्छा शक्ति क्रिया शक्ति ज्ञान शक्ति भाव अर्थात् भक्ति ही साधन जिस तत्व का ऐसा श्री सीता ब्रह्म तत्व को उपासना करता हूं।

ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः।

हे सीते ! कल्याण रूपे ! शान्ति प्रद हो।

देवा हवै प्रजापतिमब्रुवन्का सीता किंरुपमिति ।

देवता समुदाय एक समय ब्रह्मा जू के पास जाकर भगवन् सीता तत्व का क्या स्वरूप है ऐसा बोलते भये।

सहोवाच प्रजापतिः सासीतेति ।

तत पश्चात् ब्रह्मा जू बोले जो श्री सीता जी का प्रकृत स्वरूप है। सो हम तुमसे कहते हैं।

मूल प्रकृति रूपत्वात्सा सीता प्रकृतिः स्मृता ।

मूल प्रकृति होने से सीता प्रकृति रूप हैं।

प्रणव प्रकृति रूप त्वात्सा सीता प्रकृतिरुच्यते ।

प्रणव प्रकृति स्वरूप होने से श्री सीता प्रकृति स्वरूप कही गई गयी हैं।

सीता इति त्रिवर्णात्मा साक्षात्माया मया भवेत्।

श्री सीता यह त्रिवर्ण आत्मीका साक्षात माया मय है।

विष्णुः प्रपञ्च बीजं च माया ईकार उच्यते।

कार्य-कार्य विष्णु व प्रपञ्च वीज माया शब्द से ईकार कही गयी है।

सकारः सत्यममृतं प्राप्तिः सोमश्च कीर्त्यते।

सकार सत अमृत मोक्ष प्राप्ति करने वाला है।

तकारस्तार लक्ष्म्या च वैराजः प्रस्तरः स्मृतः।

तकार ॐ अर्थात् प्रणव लक्ष्मी से प्रस्तुत नाम विराट का विस्तार है।

ईकार रूपिणी सोमामृतावयव दिव्यालंकार स्रङ्मौक्तिकाद्याभरणालंकृतां महामायाऽव्यक्त रूपिणी व्यक्ताभवति।

ईकार रूपिणी सोम अमृत के समान शुद्ध अवयव अर्थात् इन्द्रियां दिव्य अलंकार अर्थात् भूषण व माला मौक्तिकादि आभरणों से शोभित है अव्यक्त रूपिणी महा माया व्यक्त रूप ही प्रगट होती है।

प्रथमा शब्द ब्रह्ममयी स्वाध्याय काले प्रसन्ना उद्भावनकरी सात्मिका द्वितीया भूतले हलाग्रे समुत्पन्ना तृतीया ईकार रूपिणी अव्यक्तस्वरूपा भवतीति सीता इत्युदाहरन्ति।

प्रथम शब्द ब्रह्ममयी स्वाध्याय कालमें प्रसन्न स्वरूप उद्‌भावना करने वाली दूसरी भूतल में हलाग्र से उत्पन्न होने वाली है तृतीया ईकार अर्थात् = ई = रूपिणी अव्यक्त स्वरूप वाली भगवति श्री सीता जू हैं।

शौनकीये।

अब शौनक ऋषि के सिद्धान्त को कहते हैं।

श्रीराम सान्निध्यवशाज्जगदानन्द कारिणी उत्पत्ति स्थिति संहार कारिणी सर्व देहिनाम् । सीता भगवती ज्ञेयामूल प्रकृति संज्ञिता । प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिन इति ।

श्री रघुनन्दन जू के निकट में बसने वाली संसार को आनन्द देने वाली सम्पूर्ण प्राणियों के उत्पत्ति, स्थिति, संहार करने वाली और मूल प्रकृति संज्ञा वाली श्री सीता शब्द करके कही गई है प्रणव रूप होने से प्रकृति ब्रह्मवादियों ने प्रणव रूप प्रकृति कहा हैं ।

अथातो ब्रह्मजिज्ञासेति च ।

इस हेतु ब्रह्म का उपदेश करते हैं ।

सासर्व वेदमयी सर्व देवमयी सर्व लोकमयी सर्व कीर्तिमयी सर्वधर्ममयी सर्वाधार कार्य कारण मयी महालक्ष्मीर्देवेशस्य भिन्न भिन्न रूप चेतना चेतनात्मिका ब्रह्मस्थावरात्मा तद्गुण कर्म विभाग भेदाच्छरीररूपा देवर्षि मनुष्य गन्धर्वरूपा असुर राक्षस भूत प्रेत पिशाच भूतादि भूत शरीर रूपा भूतेन्द्रिय मनः प्राण रूपेति च विज्ञायते ।

वह श्री सीता सर्व वेद मयी सर्व देव मयी सर्व लोक मयी सम्पूर्ण कीर्ति धर्म मयी सम्पूर्ण का आधार भूत सम्पूर्ण कार्य मयी सम्पूर्ण कारण मयी महालक्ष्मी है परमात्मा से भिन्न अभिन्न भी है चेतन भी है व जड़ स्वरूप भी है ब्रह्म रूप भी है स्थावर रूप भी है इनके गुण व कर्म विभाग भेद से शरीर रूपिणी भी है देवता ऋषि मनुष्य गन्धर्व असुर राक्षस भूत प्रेत पिशाच भूतादि भूत शरीर रूप है पञ्च भूत इन्द्रियां मन प्राण स्वरूप है ।

सा देवी त्रिविधा भवति ।

वह भगवति श्रीसीता तीन रूप से वर्तमान हैं

सक्त्यासना इच्छा शक्तिः क्रिया शक्तिः साक्षाच्छक्तिरिति ।

अपनी शक्ति से इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति, साक्ष त शक्ति, ॥

इच्छा शक्ति त्रिविधा भवति ।

इच्छा शक्ति के भेद से तीन प्रकार के हैं ।

श्री, भूमि नीलात्मिका भद्ररूपिणों प्रभाव रूपिणी सोम-सूर्याग्नि रूपा भवति ।

श्री, भूमि, नीलादि भेदों से भद्र रूपिणी प्रभाव रूपिणी चन्द्र, सूर्याग्नि स्वरूपा है ।

यथा ब्रह्माण्ड पुराणे ।

सीतायाश्च त्रिविधांशाःश्री भूनीलादि भेदतः ।
श्री भवेद्रुक्मिणी भूःस्यात्सत्यभामा दृढ़व्रता ॥
नीलास्याद्राधिका देवि सर्व लोकैकपूजिता ।

ब्रह्माण्ड पुराण में लिखा है श्री जनकनन्दिनी जू के तीन अंश है" एक अंश श्री अर्थात् लक्ष्मी, दूसरा भूः सत्य भामा जिनका दृढ़ व्रत है तीसरा नीला श्री राधा भई है यह तीनों सर्व लोक पूजित हैं पुनः—

श्री भुशुण्डि रामायणे ब्रह्मणेः वाक्यं नारदं प्रति ।
हर्षिता राधिका तत्र जानक्यंश समुद्भवा ॥
रामस्यांश समुद्भूतः कृष्णो भवति द्वापरे ।

श्री राधिका देवी श्री जनकदुलारी जू के अंश से उत्पन्न हुई ऐसा जान कर श्री राधिका जू प्रसन्न हुई द्वापर में श्री राम जू के अंश से श्री कृष्ण जू अवतार लिये हैं ॥

सोमात्मिका औषधीनां प्रभवति कल्प वृक्ष पुष्प फल लता गुल्मात्मिका औषधि भेषजात्मिका अमृतरूपा देवानां महस्तोम फल प्रदा अमृतेन तृप्तिं जनयन्ती मनुष्यणामन्नेन पशूनां तृणेन तत्तज्जीवानां सूर्यादि सकल भुवन प्रकाशिनी दिवा च रात्रिः काल कलानिमेषमारभ्य घटिकाष्टयाम दिवस (वार) रात्रि भेदेन पक्ष मासर्त्वयनसंवत्सरभेदेन मनुष्याणां शतायुः कलपनया प्रकाशमाना चिरक्षिप्रव्यपदेशेन निमेषमारभ्य परार्धपर्यन्तं कालचक्रं जगच्चक्रमित्यादि प्रकारेण चक्रवत्परिवर्तमाना ।

चन्द्र स्वरूप होकर औषधियों की उत्पत्ति करती है कल्प वृक्ष पुष्प फल लता गुल्म औषधि रूपिणी है अमृत स्वरूपिणी होकर देवताओं को अति उत्कृष्ट फल को प्रदान करने वाली है अमृत से देवताओं को तृप्ति करती हुई मनुष्यों को अन्न से पशुओं को तृण से सम्पूर्ण जीवों के सम्पूर्ण सूर्यादि भुवनों को प्रकाश करने वाली है दिन रात्रि काल कला निमेष इसके आदि से लेकर घटि अष्ट पहर दिन व रात के भेद से पक्ष मास ऋतु अयन सम्वतसर भेदों से मनुष्यों की सौ १०० वर्ष आयु के कलपनासे शोभायमान है बहुत काल जलादि काल इसके मिसु से निमेष से लेकर परार्ध पर्यन्त काल चक्र और जगत चक्र इसी प्रकार चक्र वत् परि वर्तमान है ।

सर्वस्यै तस्यैव कालस्य विभाग विशेषाःप्रकाशरूपाःकालरूपा भवन्ति ॥

इन सम्पूर्ण काल का विभाग व शेष होने से प्रकाश होते हुये काल रूप होते हैं ।

अग्निरूपा अन्नपानादि प्रणिनां क्षुत्तृष्णात्मिका देवानां मुखरूपा

वनौषधीनां शीतोष्णरूपा काष्ठेष्वन्तर्बहिश्च नित्यानित्यरूपा भवति।

अग्नि रूपा शक्ति अन्न पान करने वाले प्राणियों के भूख प्यास से वर्तमान है देवताओं के मुख रूप है वन औषधियों के शीत उष्ण रूप है काष्ट में बाहर व भीतर नित व अनित रूप से वर्तमान है।

श्री देवी त्रिविधंरूपं कृत्वा भगवत्संकल्पानुगुण्येन लोक-रक्षणार्थं रूपं धारयति।

श्री देवी तीन रूप से भगवान के संकल्प से लोक रक्षा के लिये स्वरूप को धारण करती है।

श्री रिति लक्ष्मी रिति लक्ष्यमाणा भवतीति विज्ञायते।

उन्हीं को श्री कहते हैं व लक्ष्मी व लक्ष्मण कहते हैं।

भू देवी ससागराम्भः सप्तद्वीपा वसुन्धरा भूरादि चतुर्दश भुवनानामाधाराधेया प्रणवात्मिका भवति।

वह भूदेवी मय समुद्र जल सात द्वीप पृथिवी भूः भुवः स्वादि चतुर्दश लोकों की आधार आधेय प्रणव स्वरूपिणी है।

नीला च मुख विद्युन्मालिनी सर्वौषधीनां सर्वप्राणिनां पोषणार्थं सर्व रूपा भवति।

और नीला शक्ति मुख्य विद्युत समूहों से सम्पूर्ण औषधी और सम्पूर्ण प्राणि मात्र के पोषण के लिये सम्पूर्ण रूप होकर व्याप्त है।

समस्त भुवनस्याधो भागे जलाकारात्मिका मण्डूक मयेति भुवनाधारेति विज्ञायते।

सम्पूर्ण लोकों के नीचे जलाकार स्वरूपिणी मण्डूक मयी भुवनाधार शक्ति जानी जाती है।

क्रिया शक्ति स्वरूपंहरेर्मुखान्नादः ।

क्रिया शक्ति के स्वरूप परमात्मा के मुख से नाद हुआ ।

तन्नादाद्बिन्दुः ।

और नाद से बिन्दु ।

बिन्दोरोंकारः ।

बिन्दु से ओंकार ।

ओंकारात्परतोराम वैखानस पर्वतः ।

ओंकार से परे श्री राम है वैखानस पर्वत है । अर्थात् शब्द ब्रह्म

तत्पर्वते कर्म ज्ञानमयीभिर्बहु शाखा भवन्ति ।

उस पर्वत में कर्म ज्ञानमयी बहुत शाखा हैं ।

तत्र त्रयीमयं शास्त्रमाद्यं सर्वार्थ दर्शनम् ।

यहां पर सम्पूर्ण अर्थों के देखने वाला आदि शास्त्रमय है ।

ऋग्यजुः सामरूपत्वात्त्रयीति परिकीर्तिता ।

ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, रूप से त्रय सज्ञा है ।

कार्य सिद्धेन चतुर्धा परिकीर्तिता ।

कार्य सिद्धि से वह चार प्रकार के हैं ।

ऋचो यजूंषि सामानि अथर्वाङ्गिरसस्तथा ।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद,

चातुर्होत्र प्रधानत्वाल्लिङ्गादि त्रितयं त्रयी ।

चतुः होतारो प्रधान लिंग से अर्थात् चिन्ह से उसे त्रयी संज्ञा अध्वर्यु १ होता २ उद्गाता ३ ब्रह्मा ४ वेदी की रचना यज्ञ शरीर का सम्पादन यजुर्वेद वेत्ता उदवर्यु, का काम है १ बनी हुई वेदी पर होम आदि यथालङ्कार का ठीक करना ऋग्वेदज्ञ होता का काम है २ होम के होने

के साथ साथ श्री भगवान का स्मरणादि गान सामवेद वेदज्ञ उद्गाता का काम है ३ यह सब कार्य में त्रटि होते हैं उसे सुधारना चतुः वेदों के पारदर्शी ब्रह्मा का काम है ४ एक एक के तीन सहायक होते हैं। अध्वर्यु के सहायक प्रति प्रस्थाता १ नेता २ उन्नता ३ होता के सहायक, मैत्रा, वरुण, अच्छा वाक, गाय सीता, ब्रह्मा के सहायक ब्राह्मण कपि, अग्निध्र पोता कहलाते हैं।

अथर्वाङ्गिरस रूपं सामऋग्यजुरात्मकम्।

अथर्वण अङ्गिरस रूप साम, ऋग् यजु उसकी त्रयी संज्ञा है।

तथा दिशन्त्याभिचार सामान्येन पृथक्पृथक्।

उसी प्रकार से अभिचार सामान से भिन्न २ उपदेश किया गया है।

एक विंशति शाखायामृग्वेदः परिकीर्तितः।

ऋग्वेद की २१ शाखा है ये सब प्रायः दक्षिण देश में प्रसिद्ध हैं अन्य शाखाओं को दक्षिण देशीय श्री रामानुजीय बैष्णवों ने निज धर्म की न्यूनता तथा अपने धर्म में श्री रामानन्दीय श्री वैष्णावों को लीन करने के कारण दबा दिया है जिसमें श्री सीताराम जू महाराज का सर्वोपरि सिद्धान्त है मन्त्र, रूप, लीला, धाम, पीत श्वेत स्याम ऊर्ध्व पुण्ड्र श्री सम्प्रदाय का पूर्ण धर्म-कथित है।

शतं च नव शाखासु यजुषामेव जन्मनाम्।

व यजुर्वेद की १०९ शाखा है उनमें से मैत्रायनीय, वाजसनेय, तैतिरीय और माध्यन्दिनीय ये ४ मिलती है और १०५ शाखायें लुप्त हो रही।

साम्नः सहस्र शाखाः स्युः।

सामवेद की हजार शाखा है उनमें से, आसुराणीय, कौथुमी, जैमिनी

एणीपनीय, सुपर्ण पक्ष, आपस्तम्भ सूत्र, आरण्य संहिता और वालखिल्य ये ८ शाखायें मिलती हैं और ९९२ शाखायें लुप्त हो गई है।

पञ्चाशत् शाखा अथर्वण।

अथर्वण वेद की ५० शाखाये है उन में से पैप्पल, दात्त, प्रदात्त, स्तौत औत, ब्रह्मद, शौनकी, देवदर्शी, और चरणविन्ध ये नव शाखा मिलती है और ४१ शाखा लुप्त है, उनके लोप होने का कारण यह है कि कितनी शाखा देव लोक में हैं कितनी नाग लोक में हैं कितनी यक्ष लोक में हैं व गन्धर्व लोक में तथा किन्नर लोक में इसी प्रकार अनेक लोकों में बट जाने के कारण सम्पूर्ण शाखायें मनुष्य को नहीं प्राप्त हो सक्ती हैं और जो कुछ प्रसिद्ध थी वे यवन काल में नष्ट हो गईं पूर्व काल के विषय योग मार्ग से ऋषि मुनि जाते थे अनेक स्थानों से सर्प शाखायों के सार भूत संहिता पुराण बनाये ताते पांच वेद कहाते हैं। यथा ब्रह्मा वचनः—

पुराण संहिता पञ्चमो वेदानां वेदः।

इस गायत्री हृदयोपनिषद् पुनः छान्दोग्य उपनिषद् इत्यादि में प्रमाण युक्त है, परन्तु महाभाष्य में शाखाओं के ऊपर यह लिखा है।

एक शतध्वर्य्यु शाखा सहस्रवर्त्मा सामवेदः।
एक विंशतिधा ऋग्वेदं नवधा अथर्वण वेदः।

यजुः १०० साम १००० ऋग् २१ अथर्वण के ९ शाखा विद्यमान हैं।

इन सब नियम सुगमता कर्म के लिये एक मंत्र के दो २ भाग किया मन्त्र तथा ब्राह्मण। यथा—ऋग्वेद का एक ऐतरेय नामक नाम के ब्राह्मण है। यजुर्वेद के तत्तरेय नाम के ब्राह्मण हैं व शतपथ नाम दो है। सामवेद के ताण्डय नाम के एक ब्राह्मण है। अथर्वण नाम का गोपथ नाम का एक ब्राह्मण है। यज्ञ आदि

क्रिया की विधि तथा मन्त्र का कर्म ब्राह्मण भाग से मिलता हैं। अब वेद में उप-निषद् भाग को कहते है।

उप समीपे ब्रह्मणे वाचकतया निषोदतीति उपनिषन्नाम वेदानांशिरो भागः।

नाना प्रकार के विधि व निषेध वाक्यों से ईश्वर के विषय में उप समीपे अर्थात् शरणागत करनेवाला जो सर्व वेदों का शिरो भाग उसे उपनिषद् कहते हैं।

वैखानस मतस्तस्मिन्नादौ प्रत्यक्ष दर्शनम्।

इन शाखों में वैखानस शब्द प्रथम प्रत्यक्ष दर्शन है।

स्मर्यते मुनिभिर्नित्यं वैखानसमतः परम्।

मुनियों से भी इन से परे नित वैखानस ही स्मरण किया जाता है।

कल्प, व्याकरणं, शिक्षा, निरुक्तं, ज्योतिषं, छन्दः एतानि षडङ्गानि।

कात्यायनादि प्रणीत कल्प शास्त्र वेद के कहे कर्म अनुष्ठान करने की रीति बताने वाले कल्प १ पाणिन्यादि निर्मित शब्द शुद्धि का ज्ञान व्याकरण २ चारों वेदों के उच्चारण आदि की रीति बताने वाली यज्ञवल्क्यादि मुनियों की रचित शिक्षा ३ वेद के अप्रसिद्ध पदों के अर्थ का बोधक यास्कादि मुनि विरचित निरुक्त ४ वेद का अनुष्ठान का काल बताना योषिका आचार्य रवि, शुक्र, भृगु, गर्गो, जैमिनि आदि जोतिष ५ गायत्री, जगतो आदि छन्दों का बोधक पिंगलाचार्य निर्मित, छन्दः ६ अंग है (यह सब अपर विद्या है)

उपाङ्गमयनं चैवमीमान्सा न्याय विस्तरः।

अयन मीमांसा न्याय यह उपांङ्ग वेद का विस्तार है।

धर्मज्ञ सेवितार्थं च वेद वेदोऽधिकं तथा निबन्धाः सर्व शाखा च समयाचारसङ्गतिः। धर्मशास्त्रं महर्षीणामन्तः करण

संभृतम्। इतिहास पुराणाख्यमुपाङ्गं च प्रकीर्तितम्। वास्तु वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वश्च तथा मुने। आयुर्वेदश्च पञ्चैते उपवेदाः प्रकीर्तिता।

धर्म्म शास्त्र धर्म्म के जानने वाले वेदों से अधिक, निबन्ध सम्पूर्ण शास्त्र सम्यक् आचार्य संहित आचार्य महर्षियों के अन्तःकरण निश्चय किया धर्म शास्त्र इतिहास पुराण यह उपाङ्ग कहाते हैं वास्तु अर्थात् गृह बनाना।

वेद धनुर्वेद गान्धर्व, और आयुर्वेद यह उपवेद कहलाते हैं।

दण्डो, नीतिश्च, वार्ता च विद्या वायु जयः परः एक विंशति भेदोऽयं स्वप्रकाशः प्रकीर्तितः।

दण्ड, नीति, वारता, वायु जय २१ भेदों से शुद्ध तेज माना है।

वैखानस ऋषेः पूर्वं विष्णुर्वाणी समुद्भवेत्।

वैखानस ऋषि से पूर्व विष्णु वाणि हुई

त्रयो रुपेण संकल्प्य इत्थं देही विजृम्भते। संख्या रूपेण संकल्प्य वेखानस ऋषेः पुरा। उदितो यादृशः पूर्व तादृशं शृणु मेऽखिलम्।

आत्मा त्रयरूप से विजृम्भते जमुहाता है संख्या रूप से संकल्प कर वैखानस ऋषि के प्रथम जिस प्रकार सम्पूर्ण प्रगट हुआ उस प्रकार श्रवन करो।

शश्वद् ब्रह्म मयंरूपं क्रिया शक्तिरुदाहृता।

सदा ब्रह्म स्वरूप क्रिया शक्ति कही गई है।

साक्षाच्छक्तिर्भगवतः स्मरण मात्र रूपाविभावं प्रादुर्भावात्मिका निग्रहानुग्रह रूपा शान्ति तेजोरूपा व्यक्ताव्यक्तकारणचरण समग्रावयवमुख वर्ण भेदाभेदरूपा भगवत्सहचारिणी अनपायिनी

अनवरत सहश्रायिणी उदितानुदिताकारा निमेषोन्मेष सृष्टि स्थिति संहारतिरोधानानुग्रहादि सर्व शक्ति सामर्थ्यात्साक्षाच्छक्तिरिति गीयते ।

साक्षात शक्ति श्री भगवान् के स्मरण मात्र से रूप को आविर्भाव प्रादुर्भाव निग्रह व अनुग्रह शान्ति तेजो रुप व्यक्ताव्यक्तकारण चरण सम्पूर्ण अवयव मुख वर्ण से भेद अभेद रूप भगवत सह चारिणी अनपायिनी हमेशा सङ्ग रहने वाली उदय प्रलय स्वरूप वाली निमेष उन्मेषसे सृष्टि स्थिति संहार तिरोधान अनुग्रह सर्व शक्ति सामर्थ से साक्षात कही गई है।

इच्छा शक्तिस्त्रिविधा प्रलयावस्थायां विश्रामणार्थं भगवतो दक्षिण वक्षःस्थले श्री वत्साकृति भूर्त्वा विश्रामयतीति सा योग शक्तिः ।

इच्छा शक्ति ३ प्रकार के हैं प्रलय अवस्था में विश्राम करने के लिये भगवान के दक्षिण वक्ष स्थलमें श्री वत्स स्वरूप होकर विश्राम करती है वह योग शक्ति है ।

भोगशक्तिर्भोगरूपा कल्पवृक्ष कामधेनु चिन्तामणि शङ्खपद्म निध्यादि नवनिधि समाश्रिता भगवदुपासकानां कामनया अकामनया वा भक्तियुक्ता नरं नित्यनैमित्तिक कर्मभिरग्नि होत्रादिभिर्वा यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधिभिर्वालमतणवपिगोपुर प्राकारादिभिर्विमानादिभिः सह भगवद्विग्रहार्चापूजोपकरणैरर्चनैः स्नानादिभिर्वा पितृपूजादिभिरन्नपानादिभिर्वा भगवत्प्रीत्यर्थमुक्त्वा सर्वं क्रियते ।

भोग स्वरूपिणी कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि, शङ्ख, पद्म, नवनिधि

के आश्रय करने वाले भगवत उपासकों के लिए कामना अकामना अथवा निः-काम करके भक्ति युक्त मनुष्य को नित्त नैमित्तिक कर्म अग्निहोत्रादिकों से यम नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि, छोटा महत् गोपुर प्रकारादि विमानादिकों के साथ साथ भगवत विग्रह अर्चा पूजा सभागृह स्नानादिक पितृ पूजादिक अन्न पानादिकों से भगवत प्रीत्यर्थ के लिये जो सब किया जाता हैं वह भोगाशक्ति है।

अथातो वीर शक्तिश्चतुर्भुजाऽभय वरद पद्मधरा किरीटा भरण युता सर्व देवैः परिवृता कल्पतरु मूले चतुर्भिगंजै रत्नघटै रमृतजलैरभिषिच्यमाना सर्वदैवतैर्ब्रह्मादिभिर्वन्द्यमाना अणि-माद्यष्टैश्वर्ययुता सन्मुखे कामधेनुनास्तूयमाना वेद शास्त्रादि भिः स्तूयमाना जयाद्यप्सरस्त्रीभिः परिचर्यमाणा आदित्य सोमाभ्यां दीपाभ्याँ प्रकाश्यमाना तुम्बुरूनारदादिभिर्गीयमाना राकासिनी वालीभ्यां छत्रेण ह्लदिनीमायाभ्यां चामरेण स्वाहा स्वधाभ्यां व्यजनेन भृगु पुण्यादिभिरभ्यच्यमाना देवी दिव्य सिंहासने पद्मासनारूढ़ा सकलकारणकार्यकरी लक्ष्मीर्देवस्य पृथग्भवन कल्पना।

अब वीर शक्ति को कहते हैं जो कि चतुर्भुज अभयदान दोनों हाथ में कमल धारन करने वाली किरीट आभरणों से भूषित सम्पूर्ण देवों से घिरी हुई कल्प वृक्ष के नीचे चार हाथियों और रत्नों के घड़े अमृत जल से अभिषेचन की गई सम्पूर्ण देवताओं से अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिवादिकों से सेवित अणिमादि अष्ट ऐश्वर्य्य से सेवित सामने कामधेनु से व वेद शास्त्रादिकों से स्तुति की गई जयादि अप्सरागणों से सेवित की गई सूर्य, चन्द्र दीपक से प्रकाशित तुमरू नारदादि से गीयमान राकासिनि वालियों से छत्र से ह्लादिनि माया चमर से स्वाहा,

स्वधा. व्यजन से और भृगु आदि महान ऋषियों से सेवित भगवती दिव्य सिंहासन में कमलासन से बैठी हुई सम्पूर्ण कार्यकारण करने वाली एक पृथक भवनवाली।

अलंचकार स्थिरा प्रसन्नलोचना सर्वदेवतैः पूज्यमाना वीर लक्ष्मी रिति विज्ञायत इत्युपनिषत्।

बस परमात्मिका लक्ष्मी प्रसन्न लोचन सुस्थिर सम्पूर्ण देवताओं से पूजित वीर लक्ष्मी है।

ॐ भद्रंकरणेभिरिति शान्तिः।

इति श्री सीतोपनिषद् अथर्वण वेदीय अनन्तः श्री १००८ श्री सीताराम पदपंकज मकरन्द मधुमधुप श्री सीतारामीय परमहंस परिव्राजकाचार्य युगल विनोद विहारी शरण कृत तत्व-बोधिनी भाषा टीका।